यज्ञोपवीत संस्कार

संकल्प (पिता करें)- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः॥ ॐ स्वस्ति॥ श्रीपरमात्मने श्रीश्वेत वराहाकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे चतुर्युगानां मध्ये वर्त्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे तत्रापि श्रीगङ्गा-यमुना-सरयु-नर्मदा-पार्वती-व्यासादिसरिद्भिः पाविते परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत काशी-कुरुक्षेत्र- पुष्कर -प्रयाग-विजली महादेव -खीरगङ्गा- मनीकर्ण- वशिष्टादि- नानातीर्थ-युक्त-कर्म भूमौ पुण्य क्षेत्रे हिमवत्पर्वतैक दिग्भागे हिमाचल प्रदेशे .....जनपदे तत्जनपदान्तर्गते .....नामनि ग्रामे, ... सम्वत्सरे.....अयने मासानां मासोत्तमे .....मासे, ...पक्षे, ...शुभ तिथौ, ...वासरे, यथा-शक-लग्न-मुहूर्त-नक्षत्र-योग-करणान्वित .....अमुक राशिस्थिते चन्द्रे, ...अमुक राशिस्थिते सूर्ये, शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशि स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण-गणविष्टऽस्मिन् शुभ लक्षणे शुभपुण्य तिथौ ....गोत्रोत्पन्न .....शर्माहं मम कुमारस्य गर्भाधान पुंसवन सीमन्तोन्नयन जातकर्म नामकरण निष्क्रमणान्नप्राशन चूड़ाकरण संस्काराणां स्व-स्व कालेऽकृतानां कालातिपत्तिदोष परिहारेण *व्रात्य दोषपरिहार द्वारा (जिनका जनेऊ समय पर न हुआ हो) उपनयनाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कृच्छ्रात्मकं ज्ञाताऽज्ञात प्रायश्चिताय उपनयन संस्कार करिष्ये। तदङ्गत्वेन श्रीगणपत्यादिदेवान् यथालब्धोपचारैः समस्त देवता पूजनं करिष्ये॥

मण्डलान्तर्गत समस्त देवतओं का सामान्य पूजन करें।

पुनः पिता संकल्प करें–

संकल्पः– ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः॥ ॐ स्वस्ति॥ ॐ अद्य ममास्य संकल्पित नानादोषपरिहारार्थं कृच्छ्रप्रायश्चित्त प्रत्याम्नाय भूतगोनिष्क्रय द्रव्यदानद्वारेण उपनयनाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीतये गोनिष्क्रयद्रव्यं (यथा) नाम (यथा) गोत्राय ब्राह्मणाय भवते दातुमुत्सृज्ये॥ (कुछ द्रव्य (निष्क्रयद्रव्य) ब्राह्मण को दें।)

बटुक का प्रवेश

बटुक को आचार्य (गुरू) के पास लायें। आचार्य की पूजा करें। नारिकेल फल, वस्त्र, गंध, अक्षत, पुष्पादि लेकर निम्न मंत्र से गुरू के अर्पण करें।

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः॥

अब आचार्य निम्न मन्त्रों से यज्ञोपवीत का प्रक्षालन करें।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः तान ऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमो रसः तस्य भजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ तस्माङ्ग मामवः यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

आचार्य यज्ञोपवीत की प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतां माज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्ट यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो३ प्रतिष्ठ। एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥

तदन्तर निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए आचार्य यज्ञोपवीत के नव तन्तुओं में गन्धऽअक्षत पुष्प समर्पण करते हुए प्रतिष्ठा व पूजन करें :-

१ - ॐ ओंकार दैवत्याय प्रथम तन्तवे नमः ॥

२ - ॐ अग्नि दैवत्याय द्वितीय तन्तवे नमः ॥

३ - ॐ नाग दैवत्याय तृतीय तन्तवे नमः ॥

४ - ॐ सोम दैवत्याय चतुर्थ तन्तवे नमः ॥

५ - ॐ इन्द्र दैवत्याय पञ्चम तन्तवे नमः ॥

६ - ॐ प्रजापति दैवत्याय षष्ठम तन्तवे नमः ॥

७ - ॐ वायु दैवत्याय सप्तम तन्तवे नमः ॥

८ - ॐ सूर्य दैवत्याय अष्टम तन्तवे नमः ॥

९ - ॐ विश्वेदेव दैवत्याय नवम तन्तवे नमः ॥

पुनः आचार्य यज्ञोपवीत के तीनों ग्रन्थियों का गन्धऽअक्षत पुष्प समर्पण करते हुए क्रम से प्रतिष्ठा व पूजन करें :-

१ - ॐ ब्रह्मणे नमः आवाहयामि स्थापयामि ।

२ - ॐ विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि ।

३ - ॐ रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि ।

आचार्य यज्ञोपवीत को हाथ में लेकर सूर्यावलोकन करावें :-

ॐ उद्धत्यं जातवेद सं देवं व हन्ति केतवः द्रशेविश्वाय सूर्यम् ॥

यज्ञोपवीतधारण

आचार्य यज्ञोपवीतधारण विनियोग करें :-

विनियोग- ॐ यज्ञोपवीतमित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

बटुक का दक्षिण हाथ ऊपर करवाकर आचार्य उसे यज्ञोपवीत धारण कराये :-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्व्यामि॥

आचार्य बटुक को आचमन करावें :-

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः॥

आचार्य बटुक को उत्तरीय वस्त्र (मृगचर्म) धारण कराये :-

ॐ मित्रस्य चक्षुर्द्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वी स्थाविरꣳ समिद्धम्। अनाहनस्य वसनं जरिष्णुः परीदं वाज्यजिनं दधेऽहम्॥

अब पलाश दण्ड धारण करवावें :-

ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम्। तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय॥

अब बटुक सूर्य को नमस्कार करें :-

मन्त्र— ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्यमेव शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

अथ मंत्रोपदेश (दीक्षा विधि)

आचार्य विनियोग करे:-

ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः परमात्मा देवता व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्च्छन्दांसि अग्निः वायुः सूर्यः देवता तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सर्वेषां माणवकोपदेशने विनियोगः ॥

प्रथम बार

प्रथम पाद -ॐ भूः भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्।

द्वितीय पाद -भर्गो देवस्य धीमहि।

तृतीय पाद -धियो यो न प्रचोदयात्।

द्वितीय बार

प्रथम पाद -ॐ भूः भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि।

द्वितीय पाद -धियो यो न प्रचोदयात्।

तृतीय बार

ॐ भूः भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात्।

अथ भिक्षाचर्या

पहले माता 21 अग्गर डाले। तत्पश्चात् सम्बन्धीगण और अन्त में 7 बार पिता अग्गर डाले। 'भवति भीक्षां देहि' ऐसा कहें। चाँदी की कटोरी से भीक्षा देनी चाहिए।

अथ नियमः

बटुक इन नियमों का पालन करें

- मल-मूत्र त्यागते समय जनेऊ को कान पर चढ़ाना चाहिए।
- गायत्री मंत्र की एक माला नित्य जाप करना चाहिए।
- कण्ठ से बिना बाहर निकाले ही साबुन आदि से उसे धोना खहिए।
- एक भी धागा टूट जाने पर उसे निकाल कर दूसरा पहनना चाहिए।
- दूसरों का धन हड़पने की इच्छा न करें।
- निषिद्ध कर्म करने का प्रयास न करें।
- कठोर वचन नहीं बोलने चाहिए।
- झूठ बोलना, निंदा करना, बकवास (बिना कारण बोलते रहना)।
- चोरी करना, ये अकृत्य कर्म त्यागने चाहिए।
- तन, मन, कर्म से किसी को दुःख न दें।
- दिन में नहीं सोना चाहिए।
- माता-पिता गुरू का मान करें।
- मास मदिरा मादक पदार्थ आदि तामसिक प्रवृति के द्रव्य को विल्कुल त्यागें। अन्यथा आपको भारी दोष लगेगा।